अमरूद की वैज्ञानिक तरीके से खेती

अमरूद फल वाली फसलों में से एक महत्वपूर्ण फसल है। भारत में आम, केला एवं नींबू प्रजाति के फलों के बाद अमरूद का चौथा स्थान आता है। इसकी उत्पति स्थान उष्णकटिबंधीय अमेरिका इसकी खेती उष्णकटिबंधीय एवं उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में बहुतायत रूप में ही जाती है। इसका भारत के कुल फल क्षेत्रफल में 3.3 प्रतिशत एवं उत्पादन में 3.3 प्रतिशत योगदान है। यह विटामिन सी (एस्कॉर्बिक एसिड), आहार रेशा, प्रोटीन एवं पेक्टिन का अच्छा स्त्रोत है। इसका उपयोग जैम, जैली, हॉकी अमृत, रस, केक, टॉफी एवं प्यूरी जैसे उत्पादों के रूप में प्रमुखता से किया जाता है। SA हमारे देश में इसका सबसे अधिक उत्पादन उत्तरप्रदेश में होता है एवं विश्व का सबसे अधिक गुणवत्ता वाला अमरूद इलाहबाद में होता है। राजस्थान में इसकी खेती मुख्य रूप से सवाई माधोपुर, कोटा, उदयपुर, जयपुर, झालावाड़ एवं बूंदी जिलों में की जाती है। सवाई माधोपुर का अमरूद सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

जलवायु: इसकी खेती उष्णकटिबंधीय एवं उप-उष्णकटिबंधीय जलवायु में सफलतापूर्वक की जाती है। सर्दियों के मौसम में इसकी पैदावार बढ़ जाती है और फलों की गुणवत्ता भी बेहतर रहती है। इसकी अच्छी खेती के लिए औसतन वार्षिक वर्षा (जून से सितंबर) तक 1100 मिलीमीटर की आवश्यकता होती है। इसके युवा पौधे ठंड एवं सूखे के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं।

भूमि (मिट्टी): उपयुक्त चुनाव की गई भूमि की गहरी जुताई करके उसको पौधे लगाने के पहले अच्छी तरह से समतल कर लेना चाहिए। 1×3 वर्ग मीटर आकार के गड्ढे खोदकर उसमें 30-35 किलो ग्राम कम्पोस्ट खाद सतही मिट्टी के साथ मिलाकर भर देना चाहिए।

उन्नत किस्में

सरदार अमरूद (लखनऊ-49): यह इलाहाबाद सफेदा द्वारा चयन करके तैयार की गई किस्म है। इसके पौधे अर्द्ध-बौने एवं 2.3 एवं 4 मीटर ऊंचाई के होते हैं। इसके फल बड़े, गोलाकार एवं पीला रंग लिए होते हैं। इसकी रख-रखाव गुणवत्ता भी अच्छी होती है।

इलाहबाद सफेदा: यह उत्तरप्रदेश की सबसे महत्वपूर्ण किस्म है। इसके पौधों की ऊंचाई 6.2 से 6.5 मीटर तक होती है। इसके फल मध्यम, गोल, चिकने एवं पीले-सफेद रंग के होते हैं। इसकी रख-रखाव गुणवत्ता सबसे अच्छी होती है।

ऐपल कलर: इसको रंगीन फलों के लिए उगाया जाता है। पौधे मध्यम एवं 4.0 से 5.5 मीटर ऊंचाई के होते हैं। इसके फल छोटे, गोल एवं चिकने और गुलाबी रंग के होते हैं। इसकी रख-रखाव, गुणवत्ता भी अच्छी होती है।

प्रवर्धन: व्यवसायिक रूप से अमरूद का प्रवर्धन बीज/अंकुर के द्वारा किया जाता है, लेकिन व्यवसायिक श्रेणी के फलों के लिए मुख्य रूप से शाखाओं (Vegetative) द्वारा प्रवर्धन किया जाता है, जिसमें मुख्य रूप से चश्मा चढ़ाना, गुट्टी एवं दाब विधियां प्रमुख हैं।

पौधे लगाना: अमरूद के पौधों का रोपण मानसूनी बारिश के बाद किया जाना चाहिए।

दूरी : 6×6 मीटर

गड्ढे का आकार: 90×90×90 सेमी.

तीन दिनों के बाद प्रत्येक गड्ढे में 30-35 किलोग्राम अच्छी तरह से पकी हुई गोबर की खाद की सतही मिट्टी के साथ मिलाकर भर देना चाहिए।

अन्तराशस्य: अमरूद के बाग में आरम्भिक अवस्था में मटर, चौलाई, चना एवं टमाटर आदि की खेती ली जा सकती है।

साधना: अमरूद के पौधों को उचित व ढांचा देने के लिए स्थाई एवं कांट-छांट की आवश्यकता होती है। इसके लिए खुला केन्द्र प्रणाली सबसे उपयुक्त है।

सिंचाई: अन्य फलों वाली फसलों की अपेक्षा अमरूद की फसल में सिंचाई की कम आवश्यकता होती है। पौधों का आरंभिक अवस्था में एक वर्ष में 8-10 सिंचाई करनी चाहिए एवं अप्रैल से जून तक 20 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। सर्दियों की फसल में सिंचाई करने से फलों की गुणवत्ता बेहतर होती है।

खाद एवं उर्वरक: अमरूद के पौधों को निम्न अनुसार खाद एवं उर्वरक देवें।

देखभाल: बाग को खरपतवार से मुक्त रखने के लिए समय-समय पर निराई-गुड़ाई करना आवश्यक है। निराई एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिससे उर्वरक एवं नमी की मात्रा की हानि रोकने में सहायता मिलती है।

प्रमुख कीट

फल मक्खी: यह मक्खी बरसात के फलों को विशेष हानि पहुंचाती हैं। यह फलों के अंदर अंडे देती हैं जिससे बाद में लटें (मैग्ट्स) पैदा होकर फल के अंदर के गूदे को खाने लग जाती हैं। प्रभावित फल अंत में नीचे गिर जाते हैं।

नियंत्रण

- प्रभावित फलों को इकट्ठा करके भूमि में गहरा गाड़ देने अथवा नष्ट कर देवें।
- शीरा या शक्कर 100 ग्राम के एक लीटर पानी के घोल में 10 मिलीलीटर मैलाथियॉन 50: ई.सी. मिलाकर प्रलोभन तैयार कर 60 से 100 मि.ली. प्रति लीटर की दर से मिट्टी के प्याले में डालकर जगह-जगह पेड़ों पर टांग देवें।
- मैलाथियान 50: ई.सी. का एक मिली लीटर प्रति लीटर का घोल बनाकर छिड़काव करें अथवा मिथाइल डिमेटॉन का छिड़काव मार्च, अप्रैल, मई जून एवं सितम्बर-अक्टूबर में करें।

छाल भक्षक कीट: यह कीट अमरूद के वृक्ष की छाल को खाता है तथा छिपने के लिए अन्दर डाली में गहराई तक सुरंग बना डालता है, जिससे कभी-कभी डाल/शाखा कमजोर पड़ जाती है और अंत में गिर जाती है।

नियंत्रण

- सूखी शाखाओं को काटकर जला देना चाहिए।
- डाइमेथोएट या मिथाइल डिमेटोन 0-6 प्रतिशत का घोल बनाकर शाखाओं/डालियों पर छिड़कें तथा साथ ही सुरंग को साफ करके किसी पिचकारी की सहायता से केरोसिन 3 से 5 मि.ली. सुरंग में डालें या रूई का फाहा बनाकर अन्दर रख देवें एवं गीली मिट्टी से सुरंग को बंद कर देवें।

▲▲▲

अमरूद में उर्वरक प्रबंधन

पौधे की आयु वर्ष में	गोबर की खाद (किग्रा.)	नाइट्रोजन (किग्रा.)	फॉस्फोरस (ग्राम)	पोटाश (ग्राम)
1–2 वर्ष	10–15	60	30	30
3 वर्ष	20	120	60	60
4 वर्ष	30	180	90	90
5 वर्ष	40	240	120	120
6 वर्ष	50	300	150	150
7 वर्ष एवं अधिक	60	360	180	180